2018

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

(Ritikalin Kavyadhara)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) किसने रीतिकाल को 'अलंकृतकाल' कहा है?

(ख) 'हृदयहीन' कवि किसे कहा गया है?

(ग) 'इश्कलता' किसकी रचना है?

(घ) भूषण को 'कविभूषण' की उपाधि किसने दी?

(ङ) मतिराम को किसने 'हिन्दी नवरत्नों' में स्थान दिया?

(च) सेनापति के किसी एक काव्यग्रंथ का नाम लिखिए।

(छ) 'काव्यप्रकाश' ग्रंथ के प्रणेता कौन हैं?

(ज) देव का वास्तविक नाम क्या है?

(झ) 'बिहारी सतसई' का मूल रस क्या है?

(ञ) 'कविप्रिया' किस विषयक ग्रंथ है?

2. अति संक्षेप में उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) ''वह रेणुका तिय धन्य धरनी में जग-बंदिनी''—यहाँ रेणुका कौन है? वह किस लिए जगबंदिनी है?

(ख) बादशाह ने घनानंद को नगर से क्यों निकाल दिया था?

(ग) ''तिय कित कमनैती पढ़ी, बिनु जिहि भौंह कमान''—यहाँ 'कमनैती' से क्या तात्पर्य है?

(घ) ''कातिक पूनौ की राति ससी''—का आशय क्या है?

(ङ) भूषण द्वारा अपनाये गए किन्हीं दो छंदों के नाम लिखिए।

3. संक्षेप में उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) ''भृगु कुल कमल-दिनेस मुनि, जीति सकल संसार।
क्यों चलिहै इन सिसुन पै, डारत हो जस भार॥''

संदर्भ उल्लेख करते हुए आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

''फल फूलनि पूरे, तरुबर रुरे कोकिल कुल कलरव बोलै''—का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) ''नित प्रति पून्यौई रहै, आनन-ओप-उजास''—बिहारी की नायिका के घर में नित्य पूर्णिमा की तिथि क्यों रहती है?

अथवा

बिहारी की भाषा पर एक टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

(ग) ''अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।''—का आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मतिराम का कवि परिचय दीजिए।

(घ) सेनापति के जीवन-वृत्त पर एक टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

देव के काव्य के कलापक्ष को संक्षेप में लिखिए।

4. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) क्षत्रिय है गुरु लोगन को प्रतिपाल करें।
भूलिहु तौ तिनके गुन औगुन जी न धरें।
तौ हमको गुरुदोष नहीं अब एक रती।
जौ अपनी जननी तुम ही सुख पाइ हती॥

अथवा

सोहत ओढ़े पीतु पटु स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात॥

(ख) पूरन प्रेम को मंत्र महापन, जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यौ।
ताही के चारु-चरित्र विचित्रनि यौं पचिकै रचि राखि बिसेख्यौ।
ऐसो हियो-हित-पत्र पवित्र जु आन कथा न कहूँ अवरेख्यौ।
सो घन आनंद जान अजान लौं टूक कियो पर बाँचि न देख्यौ॥

अथवा

पायनि नूपुर मंजु बजैं,
कटि किंकिनि में धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट-पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल,
मंद हँसी मुख-चंद-जुन्हाई।
जै जगमंदिर-दीपक सुन्दर,
श्री ब्रज-दूलद देव-सहाई॥

5. "केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है।" क्या आप केशवदास पर लगाये गए इस आरोप से सहमत हैं? सतर्क उत्तर दीजिए। 10

अथवा

बिहारी की शृंगारिकता पर विचार कीजिए।

6. पठित कविता के आधार पर घनानंद की विरहानुभूति पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

रीतिकालीन वीर कवि के रूप में भूषण का क्या योगदान है? पठित कविताओं के आधार पर उत्तर दीजिए।

★★★